विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 49 : नई दिल्ली : 1-7 मार्च 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण केरल यात्रा में सानंद सुखसातापूर्वक यात्रायित हैं। इस क्रिश्चियन और कम्युनिस्ट प्रधान प्रदेश में भी स्थानीय जनता आचार्यप्रवर और आचार्यप्रवर के मिशन के प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त कर रही है। इन दिनों प्रायः दिन भर गर्मी का वातावरण रहता है, किन्तु रात्रि में हल्की ठंड वातावरण में व्याप्त हो जाती है। आचार्यप्रवर केरल की यात्रा सम्पन्न कर कन्याकुमारी में पधारेंगे। वहां पूज्यप्रवर का २५ व २६ मार्च का प्रवास पूर्व निर्धारित है। तदुपरान्त आचार्यप्रवर मदुरै, ईरोड और सेलम में भी पधारेंगे। आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में मदुरै में महावीर जयंती, ईरोड में अक्षय तृतीया और दीक्षा समारोह तथा सेलम में आचार्यप्रवर के जन्मोत्सव व पट्टोत्सव के कार्यक्रम समायोज्य हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केरल में

साक्षात् देखी भक्तवत्सलता

१३ फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः कोयम्बत्तूर के पीलेमेडु से नव इंडिया की ओर प्रस्थित हुए। गीतान्जलि पब्लिक स्कूल के चेयरमेन श्री अलागिरी स्वामी ने श्रीचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित करते हुए कहा--'हमारा बहुत सौभाग्य है कि आपका प्रवास यहां हुआ। आपके प्रवास से हमारा विद्यालय परिसर पवित्र हो गया। मार्ग में 'माहीसू गेटवे' होटल के ऑनर आचार्यप्रवर के दर्शन, आशीर्वाद और पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब ६.६ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर 'नव इंडिया' में स्थित श्री निर्मल रांका परिवार के निवास स्थान 'मोती मंगलम' में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर बगड़ी के स्व. मोतीलाल रांका का परिवार अतिशय आह्लादित था।

'लाईफ स्प्रिंग' में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर की मंगलमय सन्निधि में मर्यादा महोत्सव का भव्य कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ और कल आचार्यप्रवर ने भक्तों पर अमृतवर्षा की, उनकी आशाएं पूरी कीं। उनके उत्फुल्ल चेहरे और खिलती हुई आंखें साक्ष्य बन रही थीं कि उन्हें कितना हर्ष हुआ है। आचार्यप्रवर के लिए 'भक्तवत्सल' शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसका साक्षात रूप कल लोगों ने देखा। लोग जो-जो आशा लेकर आए थे, आचार्यप्रवर ने वे-वे पूरी कीं और कुछ लोगों को तो उम्मीद से ज्यादा मिला। संभवतः मुम्बई वालों ने तो जितना सोचा था, उससे उन्हें बहुत ज्यादा मिल गया।

गुरुदेव आज 'मोती मंगलम' में पधारे हैं। 'मोती मंगलम' नाम से ही लगता है कि यह मोतीलालजी से संबंधित कोई मकान है। मोतीलालजी रांका तेरापंथ समाज के आस्थाशील, प्रबुद्ध और तत्त्वज्ञ व्यक्ति थे। उनके जीवन को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने छोटी अवस्था में ही तेरापंथ दर्शन और तेरापंथ के सिद्धांतों का कितना गहरा ज्ञान कर लिया था। उन्होंने अन्य संप्रदाय के बीच चर्चा करके जिस प्रकार तेरापंथ के बारे में प्रस्तुति की, उसी समय से ऐसा लगने लगा कि वास्तव में यह व्यक्ति तेरापंथ दर्शन का विशिष्ट प्रवक्ता व्यक्ति होगा। वे अच्छे लेखक और अच्छे वक्ता भी थे। उन्हें तेरापंथ प्रवक्ता का संबोधन भी गुरुदेव के द्वारा प्राप्त

हुआ। गुरुदेव तुलसी ने उनके अनुरोध पर तेरापंथ द्विशताब्दी से पूर्व बीकानेर चोखले की यात्रा स्थगित कर लाडनूं से सीधा बगड़ी पधारना स्वीकार किया। बगड़ी में पहली बार अभिनिष्क्रमण समारोह मनाया गया और गुरुदेव ने वहां 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर, जीवन अर्पण है सारा' का पहली बार संगान किया। गुरुदेव की दक्षिण यात्रा में भी मोतीलालजी बराबर दर्शन करते रहते थे और प्रार्थना करते रहते थे। गुरुदेव तुलसी ने बेंगलुरु के वल्लभ निकेतन में चतुर्मास किया, उसमें भी मोतीलालजी का बहुत बड़ा योगदान था, क्योंकि उनके संपर्क से उस आश्रम का स्थान मिला। उन्होंने समाज के लिए भी काम किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने उन्हें 'समाज भूषण' अलंकरण से भी अलंकृत किया। अणुव्रत के प्रति भी उनमें बहुत गहरी रुचि थी। उन्होंने अणुव्रत के लिए भी बहुत कार्य किया। आज आचार्यप्रवर ने मोतीलालजी के परिवार पर कृपा कराई है। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से, प्रोत्साहन से रांका परिवार को विशेष पोषण और पाथेय तो मिलेगा ही, सभी लोगों को भी इससे विशेष लाभ होगा।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अल्प के लिए ज्यादा को न खोने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने रांका परिवार के निवास स्थान में समागमन के संदर्भ में कहा--'मोतीलालजी रांका को मैंने देखा है। वे अणुव्रत विश्व भारती और तेरापंथ दोनों से मानों जुड़े हुए थे। वे प्रबुद्ध व्यक्ति थे। गुरुदेव तुलसी के वे एक कृपापात्र श्रावक थे। उन्होंने अणुव्रत के क्षेत्र में धर्मसंघ को अपना योगदान दिया। उनके पुत्र निर्मलजी भी अणुव्रत की संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। आज श्री मोतीलालजी रांका परिवार के घर में आना हुआ है। रांका परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी धर्म के संस्कार पुष्ट होते रहें, अणुव्रत का प्रभाव जीवन में बना रहे।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'निर्मलजी रांका आज अपने जीवन के ७२ वर्ष संपन्न कर रहे हैं। जन्मदिवस आता है, किन्तु वह कोई प्रेरणा का निमित्त बने, यह विशेष बात होती है। निर्मलजी के जीवन में साधना का विकास हो, ये खूब अच्छी धार्मिक सेवा करते रहें।'

मुख्यनियोजिकाजी ने भी रांका परिवार के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। रांका परिवार की कन्याओं ने 'महाश्रमण अष्टकम्' को प्रस्तुति दी। श्रीमती आरती रांका, तेरापंथी सभा-कोयम्बत्तूर के अध्यक्ष श्री निर्मल रांका और श्री नरेन्द्र रांका ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। रांका परिवार से संबंधित महिलाओं ने गीत का संगान किया।

सायंकालीन आहार के उपरान्त पूज्यप्रवर नव इंडिया से अविनाशी रोड की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। लगभग ४.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर अरिहंत पारख परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात पारख परिवार भावविभोर बना हुआ था।

अन्य संप्रदायों की भावना पूर्ण कर तेरापंथ भवन में पुनरागमन

१४ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः अविनाशी रोड से ए.के.एस. नगर पोन्नय राजपुरम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर स्थानीय स्थानकवासी समाज के अनुरोध पर स्थानक में पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानकवासी समाज के लोगों ने अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर के स्वागत में प्रस्तुति भी दी गई। पूज्यप्रवर ने उपस्थित जन समुदाय को पावन प्रेरणा प्रदान की। बाबा रामदेव मंदिर के आगे मंदिर से संबंधित लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। पूज्यप्रवर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर मंदिर की कुछ सीढ़ियों तक पधारे और मंगलपाठ उच्चरित किया।

आचार्यप्रवर मूर्तिपूजक समाज के निवेदन पर सुपार्श्वनाथ मंदिर के सामने स्थित उपाश्रय में पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में बड़ी संख्या में उपस्थित मूर्तिपूजक समाज के लोगों ने अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी गई। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने समुपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया।

आचार्यप्रवर साध्वी मंजुलयशाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर पधारे। वहां कुछ क्षण आसीन होकर परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। कुछ ही समय में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का भी वहां पदार्पण हो गया। इस प्रकार छोटा-सा घर आज बड़ा बन गया। पूज्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात सिंघवी परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। आचार्यप्रवर साध्वी प्रांजलयशाजी के संसारपक्षीय परिवार के निवास स्थान पर भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर परिवार को उपासना करवाई। आचार्यप्रवर के पदार्पण से सालेचा परिवार अतिशय उत्फुल्ल बना हुआ था। राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट के सदस्यों के निवेदन पर पूज्यप्रवर राजेन्द्रसूरि मंदिर के निकटस्थ हाल में भी पधारे और संबंधित लोगों को मंगलपाठ सुनाया। इस प्रकार जैन एवं जैनेतर लोगों की भावना परिपूर्ण करते हुए करीब ४.० कि.मी. की यात्रा परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे। यहां पूज्यप्रवर का चार दिवसीय प्रवास हुआ।

गांधी पार्क में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में दुरात्मा, सदात्मा, महात्मा और परमात्मा--इन चार शब्दों की चर्चा की।

१५ फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में अनासक्ति को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। गत चतुर्मास कोयम्बत्तूर में परिसम्पन्न करने वाले मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी और उनके सहवर्ती मुनि विमलेशकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी का गत चतुर्मास कोयम्बत्तूर में हुआ। मुनि विमलेशजी और मुनि सुबोधजी साथ में थे। आगे भी अच्छा कार्य चलता रहे। अपनी तपस्या और साधना के साथ जनोपकार का कार्य भी होता रहे। तत्त्वज्ञान का भी खूब प्रचार हो।'

समण सिद्धप्रज्ञजी ने अपने भावों को प्रस्तुत करते हुए पूज्यप्रवर से सन् २०२१ में होने वाली मालवा यात्रा के दौरान मुनि दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर उन्हें सन् २०२१ में मालवा में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

१६ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः मुनि नम्रकुमारजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान में पधारे और वहां कुछ समय आसीन होकर संबंधित श्रद्धालुओं को उपासना का अवसर प्रदान किया। अपने आराध्य को अपने घर में पाकर भंसाली परिवार अहोभाव की अनुभूति कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आहार संयम और आहार विवेक को अपनाने हेतु उत्प्रेरित किया। पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ।

कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथी सभा कोयम्बत्तूर के मंत्री श्री प्रेमचंद सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्रीमती बबीता गुनेचा, श्रीमती रूपकला भण्डारी और श्रीमती रेखा मरोठी ने संयुक्त रूप से गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्या मण्डल कोयम्बत्तूर की कन्याओं ने महासती सरदारांजी के जीवनवृत्त पर अपनी प्रस्तुति दी।

आज तमिलनाडु के नगरपालिका प्रशासन एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री एस.पी. वेलुमणि ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया।

मंगलभावना समारोह एवं दायित्व हस्तांतरण

१७ फरवरी। परम पावन आचार्यप्रवर का प्रातः कुछ श्रद्धालुओं के घरों के पदार्पण हुआ। आचार्यप्रवर

के अनुग्रह में अभिस्नात श्रद्धालु अतिशय हर्षविभोर थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मन को 'सुमन' बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ। कोयम्बत्तूर प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'कोयम्बत्तूर में अच्छा प्रवास हुआ। अब यह सम्पन्नता की ओर है। कल यहां से प्रस्थान है। मर्यादा महोत्सव का समारोह यहां हुआ। मर्यादा महोत्सव हमारे धर्मसंघ का बहुत बड़ा समारोह होता है। उस समारोह के बाद भी कोयम्बत्तूर में कुछ प्रवास हो गया। कोयम्बत्तूर में खूब धर्म-ध्यान की चेतना रहे। कार्यकर्ताओं में खूब अच्छा आध्यात्मिक उत्साह बना रहे, खूब अच्छी धार्मिक सेवा करने की भावना बनाए रखें, मंगलकामना।'

कार्यक्रम में मुख्यनियोजिकाजी का भी उद्बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के कोयम्बत्तूर प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में कोयम्बत्तूरवासियों द्वारा मंगलभावना का भी उपक्रम रहा। इस क्रम में मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री निर्मल रांका, तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधु बांठिया और सुश्री रुचिका भंसाली आचार्यप्रवर की आगामी यात्रा के प्रति मंगलभावनाएं व्यक्त कीं। बालिका महिमा बोथरा व भावना बोथरा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कोयम्बत्तूर के तेरापंथ महिला मण्डल और तेरापंथ कन्या मण्डल ने संयुक्त गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री राजकरण गिड़िया ने 'भूल मत जाज्यो म्हांनै चेते कीज्यो जी, बेगा-बेगा आय म्हांनै दर्शन दीज्योजी' गीत का संगान किया।

आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में फरमाया--'बेगा (शीघ्र) आने की बात कही गई। हम लोग तो 'बेगा' (जल्दी) आ सकें या नहीं, आप लोग बेगा-बेगा आकर दर्शन कर सकते हैं।' पूज्यप्रवर के इस फरमान से जनता खिलखिला उठी।

कार्यक्रम में भारतियार युनिवर्सिटि के प्रोफेसर डॉ. एम. पद्नाभन आदि ने 'जैन्स एण्ड जैनिज्म अराउण्ड द वर्ल्ड' को पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया। आचार्यप्रवर ने कहा--'यह पुस्तक 'जैन्स एण्ड जैनिज्म अराउण्ड द वर्ल्ड' ज्ञान प्रदान करने वाली सिद्ध हो। पद्मनाभनजी आध्यात्मिक विकास करते रहें।' के.जी. हॉस्पिटल के चेयरमेन डॉ. जी. भक्तवत्सलम ने अपने आस्थासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के हस्तांतरण का भी उपक्रम रहा। पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति-कोयम्बत्तूर के कार्यकर्ताओं ने अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति-ईरोड के कार्यकर्ताओं को दायित्व के प्रतीक रूप में जैन ध्वज सौंपा। ईरोड तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यप्रवर का कोयम्बत्तूर प्रवास संघ प्रभावक रहा। इस प्रवास के दौरान स्थानीय अनेकानेक प्रबुद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। उनके मुख से मुखरित होने वाले उद्गार आचार्यप्रवर के प्रति उनके आन्तरिक श्रद्धाभाव को दर्शा रहे थे। इस प्रवास के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले प्रबुद्ध और प्रतिष्ठित लोगों के नाम इस प्रकार हैं--गंगा हॉस्पिटल के चेयरमेन व प्लास्टिक सर्जन डॉ. राजा षण्मुगा कृष्णन, वरिष्ठ ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. अजय प्रसाद शेट्टी, रामकृष्ण हॉस्पिटल के रेडियोलॉजी विभाग के हेड डॉ. पी. थिरुनवुक्करसु, के.जी. हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी व चेयरमेन पद्मश्री डॉ. जी. भक्तवत्सलम, द आर्य विद्या फॉर्मेसी के मैनेजिंग डायरेक्टर पद्मश्री डॉ. पी.आर. कृष्णकुमार, मोल्ड मास्टर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री कन्जन वेंकटरमण, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के डायरेक्टर जनरल व सीबीआई के रिटायर्ड डायरेक्टर पद्मश्री डॉ. डी.आर. कार्तिकेयन, आईएएस एकेडमी के डायरेक्टर प्रोफेसर पद्मनाभन, गीतान्जलि पब्लिक स्कूल के संस्थापक श्री एम. अलागिरीस्वामी, पूर्व विधायक श्री चिन्नाराजू,

भारतीय चेम्बर ऑफ कॉमर्स-कोयम्बत्तूर के अध्यक्ष श्री वी. लक्ष्मीनारायणस्वामी, भारतीय विद्या भवन-कोयम्बत्तूर के चेयरमेन डॉ. बी.के. कृष्णनराज वानवरयर, तमिलनाडु योजना आयोग के पूर्व सदस्य व अन्ना युनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. इ. बालगुरुसामी, सीबीआई के रिटायर्ड डीजीपी श्री नरेन्द्रपाल सिंह, शांति आश्रम के डायरेक्टर डॉ. केजविनो अरम, प्रोफेसर डॉ. वेदगिरी गणेशन, जी.के.एन.एम. हॉस्पिटल के कॉर्डियोलाजिस्ट डॉ. राजपाल के. अभयचन्द, इंडियन एसोसिएशन ऑफ डर्मेटोलॉजिस्ट के पूर्व अध्यक्ष व प्रख्यात चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. सी.आर. श्रीनिवास, सीउथुली की मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमती वनिता मोहन, तोन्डामुथुर के पूर्व विधायक श्री कन्दस्वामी एम.एन., रामकृष्ण मिशन के प्रतिनिधि यतिन महाराज, युनिवर्सल ब्रदरहुड एसोसिएशन के संस्थापक एडवोकेट नंदकुमार, भारतीय विद्या निकेतन के कोरसपोन्डेंट श्री सोनपाल, द आर्य वैद्य फॉर्मेसी के मुख्य परामर्शक डॉ. रूपश्री प्रसाद, शंकरा आई हॉस्पिटल के संस्थापक डॉ. आर.वी. रमानी, अमृता युनिवर्सिटी के विजिटिंग प्रोफेसर श्री राजू आनंद, गांधीग्राम युनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर डॉ. मारकंडेयन, जनरल सर्जन डॉ. पीयूष पटवा, के.टी.वी.आर. हॉस्पिटल के संस्थापक डॉ. जनार्दन, रामकृष्ण हॉस्पिटल के जनरल सर्जन डॉ. वाई. सर्वेशवालान।

१० फरवरी को भारत के जल संसाधन, गंगा विकास व संसदीय कार्य मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

१० फरवरी को चिकमंगलूर के विधायक श्री सी.टी. रवि भी पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर को वंदन कर वे बोले--'गुरुजी! ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि समाज की सेवा कर सकूं और समाज को जीत सकूं।' आचार्यप्रवर ने उन्हें मुस्कुराते हुए फरमाया--'जीतना अपनी बुराइयों को चाहिए।' पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति भी प्रदान की।

'ईशा योगा' के प्रतिनिधि स्वामी चित्त आदि सात संन्यासी आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे। उन्होंने पूज्यप्रवर से कोयम्बत्तूर में ही स्थित 'ध्यानलिंगम्' में पधारने का निवेदन किया।

केरल और कन्याकुमारी की यात्रा : चिन्तन एवं निर्णय

आगामी केरल और कन्याकुमारी की यात्रा के दौरान स्थान आदि की अल्प उपलब्धता की संभावना के मद्देनजर आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में १४ फरवरी को अग्रणी साधु-साध्वियों की एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें आगामी यात्रा के विषय में चिंतन चला। चिंतन के दौरान मुख्य रूप से तीन विकल्प उभर कर सामने आए--

१. आचार्यप्रवर सहित किसी की भी केरल व कन्याकुमारी की यात्रा न हो।

२. साधु और साध्वियों दोनों की संख्या कुछ कम की जाए।

३. आचार्यप्रवर के साथ केवल संत ही यात्रा करें और साध्वियां मदुरै वाले मार्ग से कन्याकुमारी पहुंचे।

काफी विचार-विमर्श के उपरान्त आचार्यप्रवर ने तीसरे विकल्प को स्वीकार करते हुए साध्वियों के लिए पृथक मार्ग से कन्याकुमारी पहुंचने की संभावना खोजने का निर्देश प्रदान किया। अगले दिन साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया कि यदि आचार्यप्रवर के साथ केरल और कन्याकुमारी की यात्रा संभव न हो तो हम लोग इसी एरिया में रह जाएं, ताकि आचार्यप्रवर निश्चिततापूर्वक यात्रा कर सकें। आचार्यप्रवर ने चिंतन के उपरान्त साध्वियों के निवेदन को स्वीकार कर लिया।

उससे अगले दिन केरल और ईरोड के कार्यकर्ता पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने निवेदन किया कि साध्वियों को भी यात्रा में साथ रखवाएं। हम स्थान की व्यवस्था का हर संभव प्रयत्न करेंगे, आचार्यप्रवर के आशीर्वाद से हमें सफलता अवश्य मिलेगी। पूज्यप्रवर ने कार्यकर्ताओं की प्रार्थना को

अवधानपूर्वक सुना। मध्याह्न में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पुनः अग्रणी साधु-साध्वियों की संगोष्ठी समायोजित हुई, जिसमें कार्यकर्ताओं के निवेदन के मद्देनजर चिंतन चला और पूज्यप्रवर ने केरल और ईरोड के श्रद्धालुओं की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए साध्वियों को यात्रा में साथ रखने का निर्णय कर लिया। फिर मुख्यनियोजिकाजी आदि कुछ साध्वियों की ओर से 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' के कार्य के संदर्भ में कुछ दिन कोयम्बत्तूर आदि क्षेत्रों में रुकने की अनुज्ञा प्रदान करने का निवेदन किया गया, आचार्यप्रवर ने उन्हें अनुज्ञा प्रदान कर दी। इस प्रकार अंत में यही निर्णय हुआ कि महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि ५४ साध्वियां आचार्यप्रवर की यात्रा में साथ रहें और मुख्यनियोजिकाजी आदि २१ साध्वियां कोयम्बत्तूर तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में रहें। पूज्यप्रवर के साथ संतों के ३७ ठाणों (आचार्यप्रवर के सिवाय) की यात्रा का निर्णय पहले ही हो चुका था।

कोयम्बत्तूर से केरल और कन्याकुमारी की ओर बढ़ा कारवां

१८ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल नेतृत्व में आज अहिंसा यात्रा कोयम्बत्तूर से केरल की ओर प्रस्थित हुई। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार करीब १०.०१ बजे आचार्यप्रवर ने कोयम्बत्तूर के तेरापंथ भवन से मंगल प्रस्थान किया। इस अवसर पर कोयम्बत्तूर के सैंकड़ों श्रद्धालु पूज्यचरणों में अपने मंगल भाव अर्पित करने उपस्थित थे। श्रद्धाभावों से ओत-प्रोत अन्य जैन लोगों की उपस्थिति भी अच्छी संख्या में थी। चिलचिलाती धूप ईरोड तक की यात्रा में रहने वाली गर्मी की प्रखरता की मानों चेतावनी लिए हुए थी, किन्तु अहिंसा यात्रा के महानायक, महातपस्वी आचार्यप्रवर मौसम की प्रतिकूलता की परवाह किए बिना अपने कारवां का कुशल नेतृत्व करते हुए गतिमान थे। मार्ग में कई श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप आचार्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ।

करीब १.२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सेल्वपुरम में स्थित श्री वत्स-राजगुरु अपार्टमेंट में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। गत सायं तक पूज्यप्रवर का आज दिन का प्रवास अन्यत्र निर्धारित था, किन्तु संयोग ऐसा बना कि उस स्थान में परिवर्तन करना पड़ा और गत रात्रि में पूज्यप्रवर का वह प्रवास इस अपार्टमेंट के लिए तय हो गया। पिछले कई दिनों से पूज्यप्रवर को अपने अपार्टमेंट में कुछ समय के लिए पधारने की प्रार्थना करने वाले इस अपार्टमेंट के निवासी तेरापंथी श्रद्धालु व अन्य जैन लोगों के लिए यह सुअवसर किसी सौगात से कम नहीं था। आचार्यप्रवर के पदार्पण से उनका उल्लास चरम पर था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'हाजरी' के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए कहा--'शास्त्रकार ने सुंदर दिशा-निर्देश दिया है कि सुनकर आदमी कल्याण और पाप दोनों को जान लेता है। ज्ञातव्य सब कुछ होता है, किन्तु कर्त्तव्य सब कुछ नहीं होता। ज्ञातव्य सब कुछ होते हुए भी अनावश्यक बुरी बातों को जानने में समय नहीं लगाना चाहिए। ज्ञान, ज्ञान में अंतर होता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसके लिए कौन-सा ज्ञान ग्रहणीय है। ज्ञान होने के बाद आदमी को श्रेय का समाचरण करना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'कोयम्बत्तूर में इस बार का मर्यादा महोत्सव सम्पन्न हुआ। अनेक बातें सुनने और सुनाने को मिली। सुनने वाले हों या सुनाने वाले, सत्शिक्षाओं को ग्रहण कर लें तो दोनों का कल्याण हो सकता है। चतुर्दशी की हाजरी मानों मर्यादा महोत्सव का छोटा रूप होता है। माघ शुक्ला सप्तमी को होने वाला वार्षिक मर्यादा महोत्सव है तो हाजरी पाक्षिक मर्यादा महोत्सव है। वार्षिक वर्ष में एक ही बार आता है, इसलिए उसका ज्यादा महत्त्व है। पाक्षिक वर्ष में अनेक बार आ जाता है।

चारित्रात्माएं महाव्रतों, समितियों और गुप्तियों की अखण्ड आराधना करें। विद्यार्थियों को गर्मी की छुट्टियां मिलती होंगी। हमारे बालमुनियों को साधुपन पालने से छुट्टी नहीं मिलती। साधुपन पालने से एक सैकेण्ड के

करोड़वें भाग की भी छुट्टी नहीं मिलती। दीक्षा लेने से लेकर जीवन के अंतिम श्वास तक निरंतर अविश्राम साधुपन पालना होता है। इस प्रकार कितना सुन्दर अवसर हमें प्राप्त है।'

आचार्यप्रवर ने 'हाजरी वाचन' करते हुए साधु-साध्वियों व समणश्रेणी के सदस्यों को मर्यादाओं के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की।

राजगुरु अपार्टमेंट में आगमन के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'कुछ आकस्मिक-सा निर्णय हुआ और राजगुरु अपार्टमेंट में आना हो गया। सुना है कि यहां जैन परिवार भी रहते हैं। मैंने सोचा कि जैनों के बीच रहना हो जाए, प्रवचन हो जाए। जैन समाज में खूब धार्मिक साधना-आराधना निरवद्य रूप में चलती रहे, यह काम्य है।'

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मुख्यनियोजिकाजी को तो कोयम्बत्तूर में रहना है, यह निर्णय हुआ है। चेन्नई चतुर्मास के बाद अलग रहे, अब फिर अलग रहना है। बीच में थोड़े काल के लिए गुरुकुलवास में रहना हो गया। 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' का कार्य अच्छे रूप में चलता रहे। साथ वाली टीम भी अच्छा कार्य करे। सब सुखसाता में रहें। फिर मिलने की तैयारी रखें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर दक्षिण भारत में एक महान यायावर के रूप में परिभ्रमण कर रहे हैं। आचार्यप्रवर जहां पधारते हैं, अपने उपदेशामृत से सबको पोषण देते हैं, नया सिंचन देते हैं। चेन्नई का सफल चतुर्मास सम्पन्न कर आचार्यप्रवर मर्यादा महोत्सव करने के लिए कोयबत्तूर में पधारे। हजारों लोगों को पहली बार मर्यादाओं का यह विशिष्ट महोत्सव देखने का अवसर मिला। इस अपार्टमेंट में रहने वाले लोग भी सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें ऐसे महापुरुष का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। आचार्यप्रवर के आभामण्डल से जो विकिरण यहां विकिरित होंगे, उनसे लोगों को लम्बे समय तक प्रेरणा मिलती रहेगी।

आचार्यप्रवर ने हमें पहले कुछ समय के लिए बहिर्विहार में रहने का निर्देश दिया था। हमने उसकी तैयारी भी कर ली थी। उस समय मेरे मन में कुछ विचार आए और मैंने दो पद्य भी लिख लिए, वे इस प्रकार हैं--

करते योगक्षेम सभी का गणपति हर पल हर क्षण,
साध्वी-समुदय को विशेषतः देते हैं संरक्षण।
कठिन लगी केरल की यात्रा किया सघनतम चिंतन,
दिया ग्रीष्म अवकाश खास ही रोमांचित है कण-कण।।

स्वस्थ और आत्मस्थ आर्यवर धर्मध्वज फहराएं,
पारावार-त्रयी लहरों पर गण गौरव लहराएं।
पग-पग विजय वरें निखरे नित आत्मद्युति गुरुवर की,
शीतल छाया में प्रमुदित सब पारिजात तरुवर की।।

मैंने साध्वियों को ये पद्य सुना भी दिए थे, किन्तु पासा पलट गया। फिर मैंने दो पद्य और लिखे, वे इस प्रकार हैं--

पलट गया पासा पल भर में ली किस्मत ने अंगड़ाई,
सुगुरु-सविधि सूरज की किरणें लेकर उतरी अरुणाई।
मिला नया निर्देश रहेंगी के.के. यात्रा में सतियां,
हंसते-खिलते संभावित यात्रा की शुरू हुई बतियां।

वर्धमान दक्षिण भारत में तेरापथ की तरुणाई,
बढ़ती-चढ़ती रहे सर्वदा महाश्रमण की पुण्याई।
आतंकी हमलों से आहत लोग सभी राहत पाएं,
सफल अहिंसा यात्रा का संदेश विश्व में पहुंचाएं।।

आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा कर रहे हैं और हम चाहते हैं कि उन आतंकी संगठनों तक भी आचार्यप्रवर का संदेश पहुंचे, ताकि पूरा विश्व और विशेष रूप से भारत शांति की श्वास ले सके।'

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान मौसमगत और मार्गगत कठिनाइयों को समभाव से सहते हुए आगे बढ़ रहे हैं। मैं भी अहिंसा यात्रा की सहयायी हूं, किन्तु आचार्यप्रवर ने मुझे एक दायित्व प्रदान किया--आचार्यश्री महाप्रज्ञ के समग्र साहित्य का। मैं इस कार्य में अकेली नहीं हूं, एक सशक्त टीम इस कार्य में जुड़ी हुई है। हम सभी मिलकर उस कार्य को निष्पत्ति तक पहुंचाने के लिए कार्य कर रहे हैं। उसी कार्य के लिए मैंने कोयम्बत्तूर रहने के लिए निवेदन किया और आचार्यप्रवर ने उस निवेदन को स्वीकार किया। मैं चाहती हूं, वह कार्य शीघ्र सुफलता के साथ सम्पन्न हो, ताकि फिर कभी मुझे किसी कार्य के लिए पृथक रहने की अपेक्षा न पड़े। आचार्यप्रवर! हममें ऐसी ऊर्जा का संप्रेषण कराएं कि हम आप द्वारा प्रदत्त कार्य को शीघ्र निष्पत्ति तक पहुंचा सकें।'

श्री रमेश कोठारी, श्री देवचंद मांडोत, श्रीमती नीतू भण्डारी, श्रीमती गरिमा छाजेड़, श्रीमती आशिका हरण, श्री शांतिलाल बोहरा व श्रीमती सम्पतदेवी लुणिया ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

सायंकाल करीब चार बजे आचार्यप्रवर ने कोयम्बत्तूर के सेल्वपुरम से कोवईपुदुर की ओर प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में सूर्य कुछ प्रखरता को धारण किए हुए था, किन्तु ज्यों-ज्यों वह ढलता गया, उसकी आतप भी क्रमशः मंद बनता गया। आचार्यप्रवर लगभग ८.७ कि.मी. का विहार कर कोवईपुदुर में स्थित कस्तूरी रतिलाल ऑडिटोरियम में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। श्री आर. अरविन्द शाह ने अपने स्थान में पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

संपूर्ण विश्व में रहे शांति

१६ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कोवईपुदुर से के.जी. चावड़ी की ओर प्रस्थान किया। परिपार्श्वस्थ हरे-भरे पहाड़ मार्ग को रमणीय रूप प्रदान किए हुए थे। आसमान में विहरण कर रहे बादल पहाड़ों के ऊपरी भाग पर मानों अठखेलियां कर रहे थे। यह सुन्दर दृश्य इस मार्ग की सुषमा को और भी वृद्धिगंत करता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। पूज्यप्रवर लगभग १२.२ कि.मी. का विहार कर के.जी. चावड़ी में स्थित श्री नारायणगुरु इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'एक शब्द है--'विश्वशांति'। विश्व में शांति रहे। आतंकवाद की स्थितियां आती हैं तो अशांति की स्थिति बन सकती है। बड़ी घटना से देश में भी दुःख और आक्रोश पैदा हो सकता है। कुछ दिनों पूर्व जो हादसा हुआ, उससे भी देश की भावना में उभार-सा आ गया। हमारी मंगलकामना है कि सबके मन में अहिंसा और शांति रहे। कोई किसी को अशांत करने का प्रयास न करे। जो दूसरों को शांति पहुंचाने का कार्य करता है, वह मानों स्वयं के लिए शांति को तैयार कर लेता है और जो दूसरों को दुर्भावना से अशांति पहुंचाने का प्रयत्न करता है, वह मानों अपने लिए अशांति तैयार कर लेता है। आदमी स्वयं शांति में रहने का प्रयास करे, दूसरों की शांति में बाधा पैदा न करे और दूसरों को यथासंभव शांति पहुंचाने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

सायंकालीन आहार के उपरान्त करीब पांच बजे आचार्यप्रवर ने के.जी. चावड़ी से नवक्कराई की ओर प्रस्थान किया। आसपास खड़े नारियल, केले और ताड़ के हजारों वृक्षों के कारण विहार पथ प्राकृतिक सुरम्यता लिए हुए था। करीब ३.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नवक्कराई में स्थित 'धनलक्ष्मी श्रीनिवासन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग' में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आज केरल में सुखद प्रस्थान हो

२० फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज पश्चिम रात्रि (सूर्योदय से पूर्व का समय) में अर्हत वन्दना से पूर्व केरल यात्रा के प्रारम्भ के संदर्भ में आशु कविता के रूप में एक गीत का निर्माण किया। आचार्यप्रवर ने गीत की एक पंक्ति का संगान प्रारम्भ किया--'आज केरल में सुखद प्रस्थान हो' मुनिवृंद ने इस पंक्ति को दोहराया तो आचार्यप्रवर ने अपनी सद्यरचित अगली पंक्ति फरमायी। इस प्रकार आचार्यप्रवर ने कुल सात पद्यों का निर्माण कर दिया। वह गीत इस प्रकार है--

आज केरल में सुखद प्रस्थान हो।
भावना में ज्ञान का आधान हो।।

याद करते आज तुलसी देव को।
चित्त में उनका सदा शुभ स्थान हो ।।१।।

भिक्षु बाबा का स्मरण करते सदा।
पूज्य बालूपुत्र का अवधान हो ।।२।।

वन्दना प्रभु वीर को करते सदा।
प्रतिक्षण वर साधना गतिमान हो ।।३।।

जैन शासन प्राप्त हम सबने किया।
भिक्षु शासन की विभा द्युतिमान हो ।।४।।

आत्मशोधन हम सदा करते रहें।
हर परिस्थिति में सतत धृतिमान हो ।।५।।

मुदित मन से हम विमल खिलते रहें।
परम प्रभु की भक्ति में सृतिमान हो ।।६।।

साधु-सतियां साथ में चलते रहें।
शुद्ध नेमांसूनु, सब अवदान हो ।।७।।

लयः भिक्षु बाबा लो हमारी वन्दना...

'गॉड्स ऑन कन्ट्री' केरल प्रदेश में भक्तों के भगवान का मंगल प्रवेश

सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् परम पूज्य आचार्यप्रवर तमिलनाडु में स्थित नवक्कराई से केरल में स्थित पम्पम्पालयम की ओर प्रस्थित हुए। आज के विहार पथ के आसपास भी हरे-भरे पर्वत अवस्थिति लिए हुए थे। आसमान में विहरण कर रहे बादल पर्वतों के ऊपरी भाग को स्वयं में समाहित कर मानों उनके शिखरों को और उन्नत बना रहे थे। इस मनोहारी दृश्य के बीच मंद-मंद हवा किसी भी व्यक्ति को प्राकृतिक सौंदर्य में खोने के लिए विवश करती-सी प्रतीत हो रही थी। नारियल, केलों आदि के हजारों-हजारों वृक्ष मानों केरल

राज्य की निकटता को दर्शा रहे थे।

केरल की सीमा से करीब सौ मीटर पूर्व आचार्यप्रवर के पावन नेतृत्व में चारित्रात्माओं की कतार के रूप में जुलूस प्रारम्भ हो गया। इस जुलूस में सर्वप्रथम आचार्यप्रवर धीर-गंभीर कदमों से केरल की ओर गतिमान थे। कतारबद्ध संत पूज्यप्रवर के पदचिन्हों का अनुगमन करते हुए आगे बढ़ रहे थे। उनके बाद महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी व साध्वियों की पंक्ति गति कर रही थी। आचार्यप्रवर ने ज्योंही केरल राज्य की सीमा में प्रवेश किया, जयनिनादों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। बड़ी संख्या में उपस्थित केरल के श्रद्धालु खुशी से झूम उठे। विहार पथ पर दायीं ओर खड़े श्रावकों और बायीं ओर खड़ी श्राविकाओं ने करबद्ध होकर पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की तो आचार्यप्रवर ने उन पर आशीषवृष्टि की। केरल राज्य की सीमा में कुछ गति करने के उपरान्त चारित्रात्माओं का जुलूस सम्पन्न हुआ। इस प्रकार अहिंसा यात्रा के दौरान पूज्यप्रवर के चरणों से पावन होने वाला केरल हिन्दुस्तान का सोलहवां राज्य बन गया। केरल के पालघाट जिले में पूज्यप्रवर का मंगल प्रवेश हुआ।

केरल भारत के दक्षिण में स्थित राज्यों में एक प्रमुख राज्य है। एक ओर अरब सागर तो दूसरी ओर सह्याद्रि पर्वत शृंखलाओं के बीच बसा यह एक रमणीय प्रान्त है। समृद्ध वर्षा, प्रचुर हरितिमा, चालीस से अधिक नदियों, लम्बे समुद्र तटों, सघन वनों और जल की प्रचुरता के कारण इस प्रदेश को 'गॉड्स ऑन कन्ट्री' (ईश्वर का अपना घर) भी कहा जाता है। यहां की प्रमुख भाषा 'मलयालम' है, जो कि तमिल और संस्कृत भाषा से कुछ-कुछ मिलती-जुलती है। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा को भी यहां वैकल्पिक भाषा के रूप में सिखाया जाता है। हिन्दू, ईसाई और इस्लाम केरल के प्रमुख धर्म हैं। इसके साथ कुछ अन्य धर्मावलम्बी भी केरल में निवास करते हैं। ईसाई धर्म की गतिविधियां प्रमुखतया देखने को मिलती हैं। 'गिरजाघरों' और ईसाइयों द्वारा संचालित विद्यालयों की तो मानों यहां भरमार है। भारत के अन्य राज्यों की तुलना में आबादी की कम वृद्धि दर, ऊंची आयु दर, गंभीर स्वास्थ्य चेतना, उच्च साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा की सार्वजनिकता और उच्च शिक्षा की पर्याप्त सुविधा के कारण केरल एक समृद्ध प्रदेश के रूप में प्रतिष्ठित है। शिक्षा के प्रति स्थानीय जनता में गहरा रुझान देखने को मिलता है। यही कारण है कि यहां के अधिकांश लोग उच्च शिक्षित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा का उन्नत स्तर यहां के लोगों के जीवन स्तर को भी उन्नत बनाए हुए है। यहां के लोग आम तौर से स्वच्छताप्रिय हैं। इस कारण घरों, दुकानों आदि के आसपास प्रायः कचरा देखने को नहीं मिलता। कानून के प्रति भी यहां सामान्यतया सहज सम्मान का भाव है। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण केरल पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इसके साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा (पंचकर्म आदि) की दृष्टि से भी प्रतिवर्ष हजारों लोग इस प्रदेश में आते हैं। इस प्रकार कई दृष्टियों से यह राज्य अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

पूज्यप्रवर लगभग ६.० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर पम्पम्पालयम में पधारे। 'सांई निलयम हाइस्कूल' में आज सायं तक का प्रवास हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री षट् गोपाल आदि शिक्षकों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कर्त्तव्यनिष्ठा के महत्त्व को विवेचित किया।

पूज्यप्रवर ने केरल आगमन के संदर्भ में कहा--'परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने दीर्घ यात्राएं की थीं। वे दक्षिण भारत में पधारे थे। कोलकाता भी पधारे थे। और भी भारत के विभिन्न प्रान्तों में पधारे थे। दक्षिण भारत में उन्होंने केरल प्रदेश की भी यात्रा की थी। जिस केरल प्रदेश की यात्रा गुरुदेव तुलसी ने की थी, आज हम भी उस केरल प्रदेश में प्रविष्ट हो गए हैं। इतना अंतर है कि गुरुदेव ने इस मार्ग से केरल से विदा ली थी, हमने इस रास्ते से केरल में प्रवेश किया है। गुरुदेव केरल यात्रा सम्पन्न कर कोयम्बत्तूर पधारे थे और हम

कोयम्बत्तूर से केरल आए हैं। साध्वीप्रमुखाजी भी हमारे साथ में पधारी हैं, साध्वीवर्या और मुख्यमुनि भी हमारे साथ हैं। और भी साधु-साध्वियां साथ में हैं। साधु-साध्वियों की संख्या भी अच्छी है। इतनी चारित्रात्माओं का प्रवेश होना विशेष बात है। केरल प्रदेश में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का प्रसार हो, सब मंगलमय वातावरण रहे, जनोद्धार और आत्मोद्धार का अच्छा कार्य होता रहे। केरल की जनता को और केरल में रहने वाले श्रावकों को एक अवसर प्राप्त हो रहा है, सब अच्छा रहे, मंगलकामना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज सुबह लोगों ने बताया कि गुरुदेव ने केरल यात्रा के संदर्भ में एक गीत सुनाया था। साध्वियों की इच्छा है कि आचार्यप्रवर के मुखारविंद से गीत सुनें। आचार्यप्रवर के केरल पदार्पण के संदर्भ में मैंने भी कुछ पंक्तियां लिखी हैं--

केरल नया प्रदेश, शुभ प्रवेश गुरुदेव का।
हरो सकल संक्लेश, पग-पग विजय वरो विभो! ।।

नालिकेर के बाग, कदम-कदम पर हैं बिछे।
आध्यात्मिक अनुराग, जनजीवन में अब भरो।।

गुरुदेव जहां भी पधारते हैं, अध्यात्म की वर्षा करते हैं। उससे लोगों को सिंचन मिलता है। तेरापंथ धर्मसंघ के चारित्रात्माओं में केरल की सबसे पहली यात्रा संभवतः गुरुदेव तुलसी ने की थी। उससे पहले साधु-साध्वियों का भी यहां आना नहीं हुआ था। केरल दक्षिण भारत का कश्मीर कहलाता है। यहां की धरती पर प्रकृति प्रसन्न है। एक ओर गर्वोन्मत्त पर्वतमालाएं हैं तो दूसरी ओर अरब सागर भी लहराता है। आज भी विहार मार्ग के आसपास पर्वतमालाएं थीं। उनके आसपास मेघमालाएं भी मंडरा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि बादलों ने पहाड़ों का सुरक्षा कवच बनाया है और ये भी इसलिए कि परम पूज्य आचार्यप्रवर के आभामण्डल से जो आध्यात्मिक विकिरण निकलें, वे पहाड़ के उस पार न चले जाएं। केरल शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। इस प्रकार केरल प्राकृतिक सौंदर्य और शिक्षा से सम्पन्न है। आचार्यप्रवर यहां के लोगों को आध्यात्मिक संपदा से सम्पन्न बनाने पधारे हैं। लोग कहते हैं कि आचार्यश्री की यात्रा के दौरान मौसम बहुत गर्म रहेगा। मौसम कैसा भी रहे, परम पूज्य आचार्यप्रवर की यह यात्रा तेरापंथ और जैन शासन की प्रभावना करने वाली सिद्ध हो तथा इस यात्रा से मानवजाति का कल्याण हो, मैं यही मंगलकामना करती हूं।' साध्वीप्रमुखाजी ने गुरुदेव तुलसी की केरल यात्रा से संबंधित प्रसंग भी सुनाया।

साध्वीप्रमुखाजी के निवेदन पर आचार्यप्रवर ने केरल यात्रा के संदर्भ में स्वयं द्वारा आशुकविता के रूप में रचित गीत का संगान किया। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने पूज्यप्रवर के केरल प्रवेश के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथी सभा-कालीकट के अध्यक्ष श्री राजकुमार बाफना तथा तेरापंथी सभा-कोच्चि के मंत्री श्री दीपक कोठारी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज कालीकट के सदस्यों ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। तेरापंथी महिला मण्डल-कालीकट की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मण्डल-कोच्चि ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। तेरापंथी सभा-ईरोड के अध्यक्ष तथा अध्यक्ष तृतीया व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री नरेन्द्र नखत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री षट् गोपाल ने कहा--'अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान केरल पदार्पण पर मैं महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपनी ओर से, विद्यालय प्रबन्धन की ओर से, शिक्षकों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत करता हूं। हम सभी का यह परम सौभाग्य है जो आपश्री के महान चरण हमारे विद्यालय में पड़े हैं। आज हमारे विद्यालय की धरती ही नहीं, पूरा केरल धन्य हो गया। मैं आपकी अहिंसा यात्रा के प्रति मंगलकामना करता हूं कि यह हम सभी का निरंतर कल्याण करती रहे।' पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा

में मंगल प्रेरणा प्रदान की।

सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यप्रवर ने लगभग पांच बजे पम्पम्पालयम से कंजिकोड की ओर प्रस्थान किया। सम्मुखीन सूर्य की धूप कुछ कड़ी थी, किन्तु आचार्यप्रवर का समत्वभाव उससे अप्रभावित ही रहा। मार्ग से कुछ दूरी पर एक साथ कई 'पवन चक्की' के पंखे घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। आचार्यप्रवर करीब ५.० कि.मी. का विहार कर कंजीकोड में स्थित ए.एस.एस.आई.एस.आई. इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मैनेजर श्री क्रॉस बेल ने पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी प्रणति अर्पित की।

शक्ति का सदुपयोग करें

२१ फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कंजीकोड से पालक्कड (पालघाट) की ओर प्रस्थान किया। विद्यालय में अध्यापन करने वाली 'नन्स' ने प्रस्थान से पूर्व आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की। करीब ११.२ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर पालक्कड में स्थित श्री पार्वती मण्डपम में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में शक्ति के दुरुपयोग से बचने व उसका सदुपयोग करने की प्रेरणा प्रदान की।

विविध भारती-पालघाट के डॉ. सतवंत सिंह ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्री हितेष जैन ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित पालघाट के जैन एवं जैनेतर लोगों ने आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

पालक्कड (पालघाट) की चेयरमेन श्रीमती प्रमिला शशिधरन ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपने शहर में पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात करीब ४.३५ बजे पालक्कड से कन्नाडी की ओर प्रस्थान किया। प्रायः दिन भर आतप बरसाने वाले सूर्य की धूप अब भी कड़ी थी। ज्यों-ज्यों वह अस्ताचल की ओर बढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों उसकी प्रखरता भी मंद बनती जा रही थी। मार्ग में 'चाकरा' नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। लगभग ६.४ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर कन्नाडी स्थित हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में जिसका हुआ शिलान्यास, उस विद्यालय में पावन प्रवास

२२ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कन्नाडी से अरमियुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के दोनों ओर हरे-भरे खेत दिखाई दे रहे थे। उन खेतों में चावल की खेती मुख्यतया दृष्टिगोचर हो रही थी, उनके आसपास नारियल, केलों आदि के हजारों वृक्ष भी नजर आ रहे थे। मंद-मंद हवा पीठ की ओर स्थित सूर्य के आतप को नियंत्रित कर रही थी। कन्नूर का शिवनारायण नामक एक ग्रामीण मंदिर की ओर जा रहा था। उसने अहिंसा यात्रा को देखा तो कार्यकर्ताओं से उसके विषय में जानकारी प्राप्त की। मंदिर से लौटते हुए वह पूज्यप्रवर के समक्ष दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। पूज्यप्रवर ने उसे मंगल आशीष प्रदान करते हुए प्रेरणा दी। मार्ग के परिपार्श्व में खड़े कुछ मुस्लिम बन्धुओं ने अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। 'कुड्झलमन्नम्' के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर ने मार्ग में पालघाट जिले से त्रिशूर जिले में प्रवेश किया।

पूज्यप्रवर करीब १३ कि.मी. का विहार कर अरमियुर स्थित श्री वी.जी. सुकुमार परिवार के निवास

स्थान 'सुकुमार हाउस' में पधारे। पूज्यप्रवर का यहां प्रातराशयुक्त स्वल्पकालिक प्रवास हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से सुकुमारजी और उनका परिवार अतिशय आह्लादित था। प्रातराश के उपरान्त परिवार के सदस्यों को आचार्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में उनकी जिज्ञासाओं के समाधान देते हुए उन्हें जैन साधुचर्या आदि के विषय में अवगति प्रदान की। श्री वी.जी. सुकुमार ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'करीब पचास वर्ष पूर्व मेरे दादाजी के अनुरोध पर आचार्य तुलसी हमारे घर में पधारे थे।' श्री वी.जी.सुकुमार के चाचा श्री वी.एस. विजयराघवन ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए। बताया गया कि वे तीन बार सांसद रह चुके हैं। पूज्यप्रवर ने उन्हें भी पावन प्रेरणा प्रदान की।

इस प्रकार काफी समय तक श्री वी.जी. सुकुमार और उनके परिवार को उपासना का अवसर प्रदान करने के उपरान्त करीब ११.२५ बजे आचार्यप्रवर अलातुर की ओर प्रस्थित हुए। आकाश के प्रायः मध्य भाग की ओर बढ़ रहा सूर्य प्रखर आतप बरसा रहा था, किन्तु पूज्यप्रवर का समत्व भाव अविछिन्न था। चिलचिलाती धूप में करीब २.२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर अलातुर स्थित ब्रह्मानंद स्वामी शिवयोगी गुरुकुलम हायर सेकेण्ड्री स्कूल तथा बीएड कॉलेज परिसर में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से अभिभूत ब्रह्मानंद स्वामी शिवयोगी एजुकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री बालचन्द्रन, बीएड की कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. बालम्बिका, विद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. विजय वी. आनंद आदि के नेतृत्व में विद्यालय परिवार के सदस्य पूज्यप्रवर के स्वागत में पलक-पांवड़े बिछाए मुख्य द्वार से प्रवास स्थल की इमारत तक दोनों ओर कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही 'वन्दे गुरुवरम्' के घोष से विद्यालय परिसर गुंजायमान हो उठा। पूज्यप्रवर संस्थान के अधिकारियों के अनुरोध पर प्रवास कक्ष में पधारने से पूर्व संस्थान के कार्यालय में पधारे और वहां मंगलपाठ सुनाया।

कुछ दिनों पूर्व कार्यकर्ता पूज्यप्रवर के प्रवास के लिए स्थान की खोज करते हुए जब यहां पहुंचे, तब संस्थान के अधिकारियों ने उन्हें बताया कि हमारे इस विद्या संस्थान का शिलान्यास किसी बड़े जैन साधु के सान्निध्य में हुआ था। बाद में जब साध्वीप्रमुखाजी द्वारा लिखित गुरुदेव तुलसी की दक्षिण यात्रा के वृत्तांत 'संत चरण गंगा की धारा' को देखा गया तो उसमें इसका उल्लेख मिल गया कि स्वामी निर्मलानंदजी ने आचार्य तुलसी के पदार्पण के अवसर पर उनके समक्ष इस विद्यालय का शिलान्यास किया था। आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदार्पण को लेकर पहले से उत्साहित विद्यालय परिवार का उत्साह इस ऐतिहासिक उल्लेख की जानकारी के बाद तो और भी बढ़ गया। पूरे विद्यालय परिसर में आज उत्सव का-सा माहौल था।

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन कार्यक्रम में उपस्थित बी.एड. की छात्राओं और शिक्षिकाओं को उत्प्रेरित करते हुए गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में हुए इस विद्यालय के शिलान्यास के प्रसंग को यात्रा वृत्तांत से पढ़कर सुनाया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में ज्ञान के महत्त्व को विवेचित करते हुए ज्ञान प्राप्ति की बाधाओं से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'जैसा बताया गया कि परम पूज्य गुरुदेव तुलसी अपनी केरल यात्रा के दौरान यहां पधारे थे और स्वामी निर्मलानंदजी व इस 'गुरुकुलम' के साथ भी गुरुदेव का संबंध बताया गया। आज हमारा यहां आना हुआ है। गुरुदेव की स्मृति यदा-कदा होती रहती है। इस स्थान से जुड़े संबंध के कारण भी गुरुदेव की स्मृति होने का अवसर अनायास मिल गया। 'गुरुकुलम' के शिक्षक और विद्यार्थी ज्ञान के साथ सत्संस्कारों की पुष्टि के लिए प्रयास करते रहें, मंगलकामना।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित प्रबन्धकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी स्वीकार करने का आह्वान किया तो 'गुरुकुलम' से संबंधित लोग अपने

स्थान पर खड़े होकर कृतसंकल्प बने।

बीएड कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. बालम्बिकाजी ने गदगद स्वर में कहा--'मैं परम पूज्य महात्मा आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में वन्दन करती हूं। भगवान की कृपा और गुरुदेव का आशीर्वाद है कि आज हमें ऐसे सुगुरु के दर्शन मिले हैं और उनके पावन चरण हमारे विद्यालय प्रांगण में पड़े हैं, जिनके स्पर्श मात्र से ही हमारा पूरा 'गुरुकुलम' धन्यता की अनुभूति कर रहा है। आज यहां का कण-कण प्रमुदित है, प्रफुल्लित है। अपनी खुशियों को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपके आगमन और आपकी मंगलवाणी के श्रवण से मानों जीवन को एक नई दिशा मिल गई है। आज दुनिया में अनेक बुराइयां हैं और उन बुराइयों को दूर करने के लिए आप इतनी बड़ी और इतनी कठिन अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। हमारी वर्षों की पुण्याई के कारण आज हम आप जैसे महातपस्वी के दर्शन कर पाए। जैसा कि साध्वीप्रमुखाजी ने कहा कि आज से पचास वर्ष पूर्व आपके गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी सन् १९६९ में यहां पधारे थे और उनके आशीर्वाद से ही इस गुरुकुलम की नींव पड़ी। पचास वर्षों के बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमणजी का यहां आना हमारे लिए तो भाग्योदय के समान है। इस अपार हर्ष को मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। ऐसी कृपा प्रदान करने के लिए आचार्यश्री के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं।'

विद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. विजयन वी. आनंद ने कहा--'मैं परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को बारम्बार वंदन करता हूं। आप जैसे महान और आकर्षक व्यक्तित्व के मंगल पदार्पण से सम्पूर्ण 'गुरुकुलम' परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा है। हम सभी को मानों दूसरी बार धन्य होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। हमारे स्वामीजी हमेशा बताया करते थे कि सन् १९६९ में केरल की यात्रा कर रहे आचार्य तुलसी जब यहां पधारे थे, तब इस 'गुरुकुलम' की नींव पड़ी थी। वे बार-बार कहा करते थे कि गुरुकुलम का जो भी विकास हुआ, सब तुलसीजी के आशीर्वाद का प्रतिफल है। आज इस प्रांगण में आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल पदार्पण हुआ है तो मेरा मानना है कि हमारा 'गुरुकुलम' और नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। आप जैसे महान संत के जहां चरण टिक जाएं, वहां तो अवश्य ही कुछ नया घटित होता है। आपके आगमन से हम सभी में मानों एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है।'

गुरुकुलम में बनेगा 'हिज हॉलिनेस आचार्य महाश्रमण' ऑडिटोरियम

अपराह्न में आचार्यप्रवर विद्या संस्थान के अधिकारियों के निवेदन पर विद्यालय परिसर में ही 'ऑडिटोरियम' और नए 'एज्युकेशनल कॉम्पलेक्स' के निर्माण हेतु प्रस्तावित भूमि पर पधारे और मंगलपाठ सुनाया। ब्रह्मानंद स्वामी शिवयोगी एज्युकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री बालचन्द्रन ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'इस प्रस्तावित ऑडिटोरियम का नाम 'हिज हॉलिनेस आचार्य महाश्रमण' रखा जाएगा। इस प्रकार संस्थान परिवार ने आचार्यप्रवर के प्रति अपनी श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की। आचार्यश्री तुलसी की मंगल सन्निधि में इस विद्यालय का शिलान्यास हुआ तो आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगलपाठ से 'ऑडिटोरियम' की प्रस्तावित निर्माण स्थली पावन हो गई। इस प्रकार इतिहास की कुछ अंशों में पुनरावृत्ति हो गई।

आज प्रायः दिन भर विद्यालय के अधिकारीगण आचार्यप्रवर के प्रवास कक्ष के आसपास उपस्थित रहे। उन्होंने अपने परिजनों, मित्रों आदि को भी आमंत्रित कर आचार्यप्रवर के दर्शन करवाए।

अपने आप से युद्ध करो

२३ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः अलातुर से वडकनचेरी की ओर प्रस्थित हुए। बी.एस.एस. एजुकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री बालचन्द्रन, विद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. विजयन वी. आनंद, बीएड कॉलेज

की प्रिंसिपल डॉ. बालम्बिका आदि ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। पूज्यप्रवर की यात्रा इन दिनों राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर ५४४ पर हो रही है। यह मार्ग कहीं दस लेन, कहीं आठ लेन और कहीं फोर लेन के रूप में है।

केरल के लोगों की जीवनशैली और पहनावे में उनकी समृद्धि दिखाई पड़ जाती है। शिक्षा का उन्नत स्तर भी उसका एक कारण हो सकता है। लोगों ने एक कारण यह भी बताया कि यहां के अधिकांश परिवारों के कुछ सदस्य विदेशों में रहकर अच्छा धनार्जन कर रहे हैं। उनकी कमाई का कुछ हिस्सा वे अपने स्वजनों के लिए भारत में भेज देते हैं। केरल में काफी घर, दुकानें आदि राजमार्ग के किनारे स्थित हैं, किन्तु उनके आसपास प्रायः स्वच्छता ही दिखाई देती है। सोने के आभूषणों के प्रति केरलवासियों का लगाव न केवल उनके शरीर पर दिखाई देता है, अपितु आभूषणों के बड़े-बड़े शोरूम्स, विज्ञापनों आदि से भी यह लगाव अनुमानित हो जाता है। केरल के ग्रामीण इलाकों के मकान भी प्रायः पक्के बने हुए हैं। हां, प्रायः सभी मकानों, इमारतों आदि की छत पर (भले वह पक्की ही क्यों न हो) टीन, खपरेल आदि की ढालुआ छत भी बनी हुई दिखाई देती है। इस छत के निर्माण का उद्देश्य वर्षा के पानी की निकासी प्रतीत होता है।

इस राज्य में जिस ओर नजर जाती है, उस ओर सैंकड़ों वृक्ष नजर आ जाते हैं। इन वृक्षों में नारियल, केले आदि के वृक्षों की बहुलता है, इसके अतिरिक्त ताड़, आम, काजू, रबर आदि न जाने कितनी-कितनी प्रजातियों के वृक्ष इस भूमि को सुरम्य रूप प्रदान किए हुए हैं और न जाने कितनी-कितनी जड़ी-बूटियां प्रकृति के इस भण्डार में निहित हैं। आज के विहार पथ के आसपास 'चोको' और 'रबर' की खेती भी दिखाई दी। रबर के वृक्षों के तनों को किसी एक स्थान से छीलकर उनके नीचे एक कटोरे टांगे हुए थे। छिले हुए स्थान से बूंद-बूंद रिसता हुआ रबर उन पात्रों में एकत्रित हो रहा था। वृक्षों की प्रचुरता के बावजूद इस राज्य में गर्मी अपना प्रखर रूप दिखाती है। जहां भारत के अन्य हिस्सों में वर्तमान में सर्दी विदाई ले रही है, वहीं इस राज्य में सूर्य प्रखरता के साथ ऊष्मा बरसा रहा है। मध्याह्न की गर्मी तो अन्य राज्यों की मई-जून की गर्मी की याद दिला देती है। पूज्यप्रवर करीब १२ कि.मी. का विहार कर वडकनचेरी में स्थित सेल्वम कल्याण मण्डप में पधारे। आज सायं तक प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में आत्मयुद्ध के द्वारा कषाय विजय की प्रेरणा प्रदान की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर सायंकालीन आहार के पश्चात ४.१५ बजे वडकनचेरी से पन्थमपाडम की ओर प्रस्थित हुए। विहार के प्रारम्भ में गर्मी तीव्रता लिए हुए थी, किन्तु आचार्यप्रवर के चरण उसकी परवाह किए बिना निरंतर अपने गंतव्य की ओर गतिशील थे। विहार पथ के आसपास स्थित पहाड़ और नारियल, रबर आदि के हजारों वृक्ष मार्ग की सुषमा को वृद्धिंगत करते हुए-से प्रतीत हो रहे थे। लगभग ७.० कि.मी. का विहार कर 'मैरी माता हायर सेकेण्ड्री स्कूल' में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री धर्मचंदजी	-	कोटा
२. मुनिश्री पृथ्वीराजजी (श्रीडूंगरगढ़)	-	बोरावड़
३. मुनिश्री दर्शनकुमारजी, मुनि स्वस्तिककुमारजी (मुनिश्री हर्षलालजी के साथ संयुक्त)	-	आसीन्द
४. साध्वी शांताकुमारीजी	-	छोटी खाटू
५. साध्वी विशदप्रज्ञाजी	-	जैतोमण्डी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

६. साध्वी विद्यावतीजी 'प्रथम'	-	लहरागागा
७. साध्वी जयप्रभाजी	-	रोहिणी, दिल्ली
८. साध्वी रतनश्रीजी (श्रीडूंगरगढ़)	-	ग्रीनपार्क, दिल्ली
९. साध्वी प्रशमरतिजी	-	जगराओं
१०. साध्वी गुणमालाजी	-	आमेट
११. साध्वी प्रमोदश्रीजी	-	जसोल
१२. साध्वी संघप्रभाजी	-	श्रीगंगानगर
१३. साध्वी कंचनकुमारीजी (लाडनूं)	-	रोहतक

वर्षीतप का प्रारंभ एवं उसका साधनाक्रम

वर्षीतप करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए ध्यातव्य है कि भगवान ऋषभ का दीक्षा दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी वर्षीतप प्रारंभ करने हेतु निर्धारित तिथि है। इस बार चैत्र कृष्णा अष्टमी तदनुसार २८ मार्च २०१९ को प्रारंभ होने वाला यह वर्षीतप सन २०२० की अक्षयतृतीया पर संपन्न होगा। वर्षीतपकाल में प्रतिदिन पालनीय नियम इस प्रकार हैं--

• ऊं ऋषभाय नमः मंत्र की ११ माला • ध्यान आधा घंटा • मौन एक घंटा • ब्रह्मचर्य की साधना • एक सामायिक • सचित्त एवं जमीकन्द का त्याग • रात्रि में चौविहार • एक बार प्रतिक्रमण या उस समय स्वाध्याय/जप • क्षमा की साधना : क्रोधवश कठोर शब्दों का प्रयोग हो जाए तो पारणे के एक दिन चीनी अथवा नमक या लाल मिर्च का प्रयोग नहीं करना।

वर्षीतप करने वाले चारित्रात्माओं व समणियों के नाम प्रेषित करें

सन् २०१८-१९ में वर्षीतप करने वाले चारित्रात्माओं तथा समणियों के नाम (उनका कौन सा वर्षीतप गतिमान है, इस उल्लेख के साथ) यथाशीघ्र मोबाइल नम्बर-७०४४७७८८८८ पर व्हाट्सएप के माध्यम से प्रेषित करें, ताकि उनका विज्ञप्ति में यथासमय उल्लेख किया जा सके।

विज्ञप्ति अंक ४७ में सुधारकर पढ़ें--

- पृष्ठ ७ पर 'अक्षय तृतीया के संदर्भ में घोषणाएं' शीर्षक के अंतर्गत एक और पंक्ति जोड़कर पढ़ें--सन् २०२३ की अक्षयतृतीया का समारोह सूरत में करने का भाव है।
- पृष्ठ १२ पर 'भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग का प्रायश्चित्त' शीर्षक के अंतर्गत क्रमांक ८ पर प्रकाशित मुनि तन्मयकुमारजी (लाडनूं) का नाम न माना जाए तथा क्रमांक १२ के बाद साध्वी गुणमालाजी (उदयपुर) १२९१ को एक मासिक छेद का प्रायश्चित्त पढ़ा जाए।
- पृष्ठ १६ पर प्रकाशित सरदारशहर से संबंधित घोषणा आचार्यप्रवर ने ९ फरवरी को मध्याह्न में की।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता ७०० ००१
मो. नं. ७०४४७७८८८८ Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९ नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला